दिल ऐसे धड़के कि

पूरी दुनिया सुने विकास के तराने

भारतीय संस्कृति और संस्कारों में सबसे ऊपर है अपनापन और अपनत्व भाव। जैसे मन अपना, घर अपना, वैसा ही देश अपना-प्रदेश अपना। जरुरत है तो बस एक अहसास के साथ अपने प्रदेश को अपना समझने और समझाने की और अगर हम अपनी चीज पर अपना हक खोने लगे तो याद दिलाने में हर्ज ही क्या है? हक तो याद रहते हैं व्यक्ति को, भूलता तो वह दायित्व है- हम सब जानते है जहां हक होते हैं वहीं दायित्व भी होते हैं। ये प्रदेश तो हमारा है ही तो दायित्व भी हमारे ही हैं। इतनी सी बात है यह, अगर हर व्यक्ति की समझ में आ जाए तो मध्यप्रदेश को देश में नम्बर एक प्रदेश बनने में देर नहीं लगेगी।

भारत का लम्बा इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और संवर्धन की जिम्मेदारी समाज ही वहन करता आया है। रियासत काल हो या लोक तांत्रिक सरकारों का समय, समाज हर काम के लिए सरकार पर आश्रित नहीं रहता। विकास गंगा में बूंद-बूंद की तरह आमजन की भागीदारी जरुरी होती है। आज का दौर आपाधापी का दौर है- भागमभाग का, जिसके चलते व्यक्ति में यह धारणा घर कर गई है कि मेरा काम अपने लिए सोचना है। प्रदेश के विकास के लिए सरकार सोचेगी। सरकार कौन? जो सत्ता में है वह सरकार, यही जवाब आसानी से दे दिया जाता है। पर तब भी वह भूल जाता है कि सरकार उसी ने चुनी है। यह सोच के संक्रमण का नतीजा है- यदि सरकार आपकी है तो आपसे उसका संवाद जरूरी है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान अपने प्रदेश की उसी जनता से रुबरु होने, उनसे एक सहज संवाद कायम करने के उद्देश्य से एक प्यार भरा आव्हान करते हुए गणतंत्र दिवस के पावन प्रसंग पर 26 जनवरी से निकल रहे हैं- प्रदेश के गांव- गांव की उन गलियों, मोहल्लों, खेतों-खलिहानों से होते हुए, यह कहते हुए कि आो बनाएं अपना मध्यप्रदेश। यानि कि अपने मध्यप्रदेश के विकास को नई दिशा दें, नए आयाम दें, और समृद्ध, स्वस्थ, सम्पन्न और शक्तिशाली प्रदेश के रूप में विकसित करें।

इसी कड़ी में पहले मुख्यमंत्री ने अलग-अलग वर्ग के लोगों को अपने घर बुलाया। आओ और बताओ की तर्ज पर। अब वे गली, मोहल्लों, चौराहों, चबूतरों, खेतो, खलिहानो में खुद जा रहे हैं।

प्रदेश के हित में आप क्या सोचते हैं मिलिए और बताईए मुझे ....? यात्रा की शुरुआत मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश की जीवन रेखा पवित्र माँ नर्मदा के उद्‌गम स्थल अमरकंटक से कर रहे है। वे ऐसी यात्रा हफ्ते में दो बार प्रदेश के दूरस्थ क्षेत्रों के भ्रमण के रूप में करेंगे।

यात्रा का मूलमंत्र रहेगा आओ बनाएं अपना मध्यप्रदेश । यह यात्रा समर्पित रहेगी मध्यप्रदेश के उस समाज को जो आम आदमी से बनता है, जो किसी से उपकृत होने के बजाए अपने खेतों में पसीने की बूंदों को निचोड कर मोती से दाने उगाता है, जो कठोर श्रम से अपने शरीर को तपाता है, जो जागृत नागरिक कहलाना चाहता है, जो मुख्य मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के आव्हान पर अपने प्रदेश का मेहनत से विकास करना चाहता है। यह यात्रा उनके लिए है जिनका यह प्रदेश है । मुख्यमंत्री इस नए संकल्प को गणतंत्र दिवस से शुरू कर रहे है यह हमें याद दिलाता है कि गणतंत्र का सही अर्थ आम जन को एक साथ जोड़कर ही बन सकता है एक तंत्र अर्थात एक सुव्यवस्था ।

विकास की भागीदारी में समाज की महती भूमिका में आई जागृति से ही संभव है एक समृद्ध सम्पन्न, स्वास्थ, सुशिक्षित हरे-भरे प्रदेश की परिकल्पना का साकार होना। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने इस अभियान को कुछ यूँ देखा है जैसे वे कहना चाहते हैं ''सेव नेशनल हार्ट''। हाँ देश का दिल हमारे पास है हमारा प्रदेश। इसकी हार्टबीट कुछ ऐसी हो कि पूरे देश की रगों में हमसे होकर सुनाई दे। इस हार्ट की पंपिंग ऐसी हो कि विकास की धाराएं देश की रगों में हमसे होकर बहें। यह दिल गाए तो पूरा देश सुने। दिल तभी झूम कर गाता है जब वह प्रसन्न होता है- हम सब मिल वही खुशहाली लाएं जो विकास की रागिनी बन कर गूंज उठें। यह अनूठा प्रसंग बन सकता है- मध्यप्रदेश को समृद्ध और विकसित राज्य बनाने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए स्वयं को पुनर्संकल्पित करने पर । सतपुड़ा और विंध्याचल के मध्य हम हैं, हमारा मध्यप्रदेश, वही मध्यप्रदेश जिसे प्रकृति हीरे की खदानें दी है। हरे भरे जंगल हैं। हजारों जड़ी-बूटियों की संजीवनी दी है। पुरावैभव का अद्‌भुत सौन्दर्य, यहाँ साँची, खजुराहो, माण्डव, भीमबेटिका जैसी सम्पदा है तो नर्मदा की पावन घाटी भी। जहाँ महाकाल और ममलेश्वर (ओंकारेश्वर) जैसे दो ज्योतिर्लिंग के मध्य औद्योगिक, व्यावसायिक शहर इंदौर है तो भोपाल जैसी सौन्दर्ययुक्त राजधानी। क्या नहीं है हमारे पास मालवा की काली मिट्टी भरा पठार है तो तपते हुए निमाड़ की गरमाहट भी है। हम समृद्ध हैं, हम सम्पन्न हैं- आवश्यकता अपने प्रदेश की उर्वरता, सम्पन्नता और संभावना को पहचानने की है- यह पहचान करने के लिए चाहिए दृष्टिकोण में परिवर्तन, एक सकारात्मक सोच- मुख्यमंत्री आओं बनाएं अपना प्रदेश के आव्हान के साथ हमारी सोच को सकारात्मक प्रवाह देने निकल रहे हैं। वे कहते हैं कि हमने विकास किया है लेकिन उन्नति और प्रगति की बहुत सी संभावनाएँ अभी खुली हुई है।

प्रदेश को विकसित राज्यों की अग्रपांत में ले जाकर खड़ा करने के लिए एक व्यापक सर्वानुमति तैयार किये जाने की जरूरत है। सरकार और समाज एक साथ खड़े होंगे तो प्रदेश के नवनिर्माण के सपने स्वमेव ही साकार होने लगेंगे। चूंकि मध्यप्रदेश में आसपास के अनेक राज्यों के हिस्से आकर मिले जिसके कारण वहां की विविध संस्कृतियां यहां रहीं। इसके कारण लोगों में मध्यप्रदेशियत का जज्बा नहीं बन पाया। राज्य की स्थापना के कुछ समय तक यह बात काफी हद तक सही भी रही लेकिन अब ऐसा नहीं है। आज प्रदेश के विभिन्न अंचलों में रहने वाले लोग स्वयं को मध्यप्रदेश का वासी होने पर गर्व का अनुभव करते हैं और उसके विकास के लिये निष्ठा से काम भी कर रहे हैं, लेकिन मध्यप्रदेश को अपना कहना किसी संकीर्ण प्रांतीयता की बात नहीं है। वह तो मध्यप्रदेश के प्रति ममत्व की बात है, जिसमें यह ममत्व है, मध्यप्रदेश उसका है। यह भीतरी-बाहरी की बात नहीं है, यह बात है उसकी कि देश की यह धड़कन किस दिल में गूंजती है।